राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

डॉ. नारायणशास्त्री काङ्करः
राष्ट्रपतिसम्मानितो विद्वान्
संस्कृत प्रचार-प्रसार शोधपीठम्

(गताङ्कादग्रे)

यत्रापि विलोक्यते अद्य, तत्र चरित्र - क्षरणमेव विलोक्यते ।
समाजस्य तु का कथा ? प्रशासनमपि नावधत्तेऽत्र हा हन्त ! ॥15॥

जहाँ भी देखा जाता है, आज वहीं चरित्र-क्षरण ही देखा जाता है । हा ! दुःख है, समाज की तो क्या कथा कही जाय ? प्रशासन भी इस विषय में ध्यान नहीं देता है।

Today, wherever you look, the degradation of a character can be seen. Yes, it's pitiful, what can be said about society. Even the government does not do anything about it.

शासक-शासितयोर्गुरु,-शिष्ययोः स्वामि-सेवकयोः पति-पत्न्योः।
क्व वर्तते पुरातनो, मधुरादर्श उल्लेख्यः सम्बन्धोऽद्य ? ।।16।।

शासक और शासित में, गुरु और शिष्य मे, स्वामी और सेवक में एवं पति-पत्नी में पुराकालीन मधुर उल्लेखनीय आदर्श सम्बन्ध आज कहाँ है ?

Where is that beautiful/sweet, respectful relationship of old described (in the scriptures) between the ruler and the ruled, guru and disciple, master and servant?

भ्राता भ्रातुर्माता,-पितरौ सन्तानात् शासितः शासकात् ।
प्रतिवेशी प्रतिवेशित, आलोक्यते किं नहि दुःखी सर्वत्र ? ।।17।।

भाई भाई से, माता - पिता सन्तान से, शासित शासक से और पड़ोसी पड़ोसी से क्या सर्वत्र दुःखी नहीं देखा जाता ?

Can we not see quarrelling between brothers, parents and children, ruler and the ruled, and between neighbours, everywhere?

दुःखे कोऽपि नहि कस्य,-चिदपि सहायतां कर्त्तुमायाति पुरः।
म्रियतां नाम कोऽपीह, सर्वेऽपि लग्नाः स्वार्थान् साधयितुं हि ॥18॥

दुःख में कोई भी किसी की सहायता करने के लिये सामने नहीं आता है। यहाँ कोई भी मर जाय, सभी स्वार्थों को साधने में लगे हुए हैं।

Nobody is coming to help in the case of need. Where somebody dies, all people are trying to fulfil their selfish wishes.

विदेशि- शासनात् त्वत्र, प्राप्ता मुक्तिर्द्विसप्तति-वर्ष-पूर्वम्।
परं तद् - वेशभूषा -,भाषा संस्कृतितो मुक्तिर्नाप्ता हा! ॥19॥

विदेशी शासन से तो यहाँ 72 वर्ष पहले की मुक्ति प्राप्त हो गई, परन्तु उन विदेशियों की वेशभूषा, भाषा और संस्कृति से मुक्ति प्राप्त नहीं हुई है हा ! दुःख है।

Yes, it's a pity that we got free from the foreign rulers some 100 years ago but still are not free from their way of clothing, language and culture.

अंग्रेजा मा शासतु परं तद् - भाषा ऽङग्रेजी शास्त्येव।
स्वराष्ट्रभाषा हिन्दी, निज-सपत्नी-कुचेष्टितं सहते चिरात् ॥20॥

अंग्रेज भले ही हमारे राष्ट्र पर शासन न करते हो परन्तु उनकी भाषा अंग्रेजी तो शासन कर ही रही है। अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी अपनी अंग्रेजी सौत की कुचेष्टाओं को बहुत समय से सह रही है।

Although Englishmen do not rule our country, the English language does. For a long time now, our national language Hindi suffers the wicked/mischievous comments from the English speakers.

मानवेऽत्र मिथःक्वापि, नहि प्रेमभावो विलोक्यते हा हन्त !।
पशु-पक्षिणः स निर्दय, उदरसात्करोति दुरात्मा नित्यमेव ॥21॥

हा ! दुःख है, यहाँ मानव में परस्पर कहीं भी प्रेमभाव नहीं दीखता है। निर्दय बना हुआ वह दुष्ट आत्मा वाला मानव पशु-पक्षियों को नित्य ही पेट के हवाले कर रहा है।

Yes, it is a pity that nowhere can be seen the love between the people. Those wicked people, without any mercy, are constantly gobbling birds and animals.

(क्रमशः)